Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2021 = 7.380, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, NOV-DEC, 2021, VOL- 9/68

शिक्षक–शिक्षा में अपेक्षित प्रयोगों की आवश्यकता

प्रदीप कुमार गुप्त, Ph. D.
एसोशिएट प्रोफेसर, शिक्षा संकाय, आदर्श कृष्ण महाविद्यालय शिकोहाबाद

Paper Received On: 21 DEC 2021
Peer Reviewed On: 31 DEC 2021
Published On: 1 JAN 2022

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

शिक्षक शिक्षा के सन्दर्भ में कुछ कहने से पूर्व हमें भावी शिक्षा व्यवस्था के स्वरूप को ध्यान में रखना होगा। भावी शिक्षा व्यवस्था की परिकल्पना ही शिक्षक–शिक्षा की कल्पना में सहायक हो सकती है। यहाँ कुछ बिन्दुओं पर प्रकाश डाला जा सकता है, जिनकी चर्चा परमावश्यक है।

1. शिक्षा व्यवस्था के विकल्प एवं शिक्षक–शिक्षा :

अतीत से वर्तमान तक शिक्षा व्यवस्था में अपेक्षित एवं अनपेक्षित परिवर्तन होते रहे हैं। यहाँ हम शिक्षा व्यवस्था को राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय आवश्यकताओं के परिप्रेक्ष्य में विकसित होते देखना चाहते हैं, जिसमें सजग समाज के वैयक्तिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक एवं आध्यात्मिक उद्देश्यों की पूर्ति सम्भव हो सके। इस प्रकार की शिक्षा व्यवस्था के लिए शिक्षक–शिक्षा में वे क्रान्तिकारी विकल्प चुने जाने चाहिए जो विभिन्न प्रकार की शिक्षा व्यवस्था के विकल्पों के लिए, सुयोग्य शिक्षक उपलब्ध करा राके। शिक्षक–शिक्षा के निम्नलिखित विकल्प समीचीन हो सकते हैं–

1. औपचारिक व्यवस्था एवं सम्बन्धित शिक्षक–शिक्षा
2. खुली अधिगम व्यवस्था एवं शिक्षक–शिक्षा (अनियोजित शिक्षा व्यवस्था एवं शिक्षक–शिक्षा)
3. पत्राचार शिक्षा व्यवस्था एवं शिक्षक–शिक्षा
4. इण्टरनेट आधारित व्यवस्था एवं शिक्षक–शिक्षा
5. इलैक्ट्रोनिक उपकरणों पर आधारित शिक्षा व्यवस्था एवं शिक्षक–शिक्षा
6. बिना पुस्तक की शिक्षा व्यवस्था एवं शिक्षक–शिक्षा
7. मुक्त शिक्षा व्यवस्था एवं शिक्षक–शिक्षा
8. जीवन से सम्बन्धित शिक्षा व्यवस्था एवं शिक्षक–शिक्षा
9. मिश्रित बहु माध्यम शिक्षा व्यवस्था एवं शिक्षक–शिक्षा

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

10. अपरम्परागत शिक्षा व्यवस्था एवं शिक्षक–शिक्षा (जीवन अनुभव से प्राप्त ज्ञान का संग्रहण व विभिन्न क्षेत्रों के अनुभवों का समस्या समाधान हेतु उपयोग)

2. कक्षा कक्ष के विकल्प व शिक्षक–शिक्षा :

परम्परागत शिक्षण से हटकर वैज्ञानिक व तकनीकी संसाधनों का उपयोग करते हुए यह अभिकल्पित किया जाय कि आज हम कक्षा–कक्ष की बजाय विभिन्न परिस्थितियों व दशाओं में कैसे शिक्षण करें या सीखने वाले को कितनी सुविधाजनक स्थिति में सीखने के अवसर सुलभ करा सकते हैं ? शिक्षा व्यवस्था में चयनात्मक विकल्प पर आधारित शिक्षा शिक्षक–शिक्षा की रूपरेखा के नियोजन के लिए आधार प्रदान कर रही है। इस सन्दर्भ में कल्पना धारित योजनाएँ नये–नये विकल्प और प्रयोग की संभावनाओं की उत्पत्ति की आधार हैं। शिक्षा शास्त्रियों को चाहिए कि लक्ष्याधारित नये प्रयोग कर साहसी होने का परिचय दें।

3. परिवेश की उत्पत्ति एवं शिक्षक–शिक्षा :

शिक्षा व्यवस्था में परिवेश की उत्पत्ति प्रत्यय पर अभी चर्चा की असीम संभावनाएँ हैं। परिवेश शिक्षा व्यवस्था के चयनित विकल्प पर ही आधारित होगा। पाठ्यक्रम के विभिन्न तत्वों की समझ पैदा करने के लिए शिक्षा व्यवस्था में जिस प्रक्रिया का चयन किया जायेगा, वही प्रक्रिया परिवेश की उत्पत्ति का आधार बनेगी। साहित्यिक, वैज्ञानिक, आर्थिक, सामाजिक, आध्यात्मिक पाठ्यवस्तु की विवेचना में कौन सा माध्यम (विधा) उपयुक्त रहेगा, यह अभी विचार मंथन के बाद सुनिश्चित हो सकेगा।

4. शिक्षण के विकल्प एवं शिक्षक–शिक्षा :

शिक्षण के विकल्प चुनना, शिक्षा व्यवस्था का अंग है। शिक्षण को सौद्देश्य बनाना शिक्षक–शिक्षा की क्रियात्मक प्रक्रिया है। विभिन्न शोध निष्कर्षों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि विभिन्न उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए मुखाभिमुख शिक्षण के बजाय अन्य विकल्पों का प्रयोग भी बेहतर होगा। इस क्षेत्र में शोधकार्य जभी सम्भव है, जब शिक्षा व्यवस्था में नये प्रयोग स्वीकार किए जायें।

5. पाठ्य पुस्तक विकल्प एवं शिक्षक–शिक्षा :

परम्परागत शिक्षक–शिक्षा में परिवर्तन एक सुनिर्धारित बिन्दु नहीं है। शिक्षा व्यवस्था में नए प्रयोग ही शिक्षक–शिक्षा के लिए बहुआयामी क्षेत्र उपलब्ध करायेंगे। सैद्धान्तिक सहमति के लिए गोष्ठियों और सम्मेलनों के माध्यम से विभिन्न अनुभवी विद्वानों व विशेषज्ञों के बीच संवाद शुरू हुआ है। गोष्ठियों और सम्मेलनों के माध्यम से ऐसे ज्वलन्त प्रश्नों के उत्तर खोजने के प्रयास सम्भव हैं, जिनका उचित उत्तर अभी तक दिया जाना सम्भव नहीं था। ये चर्चा विशिष्टता के क्षेत्र तक जानी चाहिए। विशिष्टता के क्षेत्र व्यवस्थित किए जाने चाहिए। यथा– छात्र का स्तर, छात्र की मानसिक क्षमता, छात्र का स्वभाव, छात्र के लिए पुस्तकों का निर्धारण या छात्र के लिए खुला पाठ्यक्रम, शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए ऐसे विकल्प जिसमें अपरम्परागत शिक्षण की विभिन्न विधाएँ सम्मिलित की गयी हों, यथा फिल्म, नाटक, कवि सम्मेलन, अभिनय, समीक्षा इत्यादि।

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

6. शिक्षक शिक्षा एवं भवन :

निरन्तर बदलते हुए परिवेश में शिक्षा व्यवस्था में परिवर्तन स्वाभाविक हैं। ऐसे में हमारी कल्पनाएँ दूसरे क्षेत्रों के अनुभव व प्रयोगों पर आधारित हो सकती हैं। ऐसा करने पर शिक्षक–शिक्षा के भवन भी कई प्रकार के हो सकते हैं। बहुविकल्पीय शैक्षिक प्रबन्धन के लिए हमें बड़ी–बड़ी प्रयोगशालाएँ चाहिए तो कभी–कभी फिल्म स्टूडियो का सूचना तकनीक पर आधारित व्यापक संजाल युक्त उपयुक्त भवन। ऐसे में हमारी कल्पनाएँ अपरम्परागत शिक्षण संजाल को व्यापक व सुदृढ़ बनाने वाली होंगी।

7. शिक्षा व्यवस्था का गतिशील स्वरूप व शिक्षक–शिक्षा :

व्यवस्था परिवर्तन उपादेयता पर आधारित है। शिक्षा व्यवस्था परिवर्तन उपादेयता पर आधारित है। शिक्षा व्यवस्था अपेक्षित परिवर्तन लाने में सहायक है और अपेक्षित परिवर्तन होने पर शिक्षा व्यवस्था में परिवर्तन की अपेक्षा होती है। परस्पर आधारित परिवर्तन कल्पना एवं प्रयोग के बिना समीचीन नहीं हो सकता। सामान्य शिक्षा व्यवस्था के लिए शिक्षक–शिक्षा का प्रारूप सुनिश्चित करने से बेहतर होगा कि प्रयोगाधिरित शिक्षा व्यवस्था के लिए शिक्षण प्रशिक्षण सिद्धान्त सुनिश्चित किए जायें। आज शिक्षा व्यवस्था में उद्देश्य निष्ठ प्रयोगों के परीक्षणों की आवश्यकता है।

8. सामाजिक प्रयोजन व शिक्षक–शिक्षा :

व्यक्ति से राष्ट्र व समाज की अपेक्षाएँ उसकी समाजपरक क्रियाओं से है। व्यक्ति के चिन्तन को समाजपरक बनाने में शिक्षा व्यवस्था अपनी भूमिका अदा करती है। शिक्षा व्यवस्था को सुव्यवस्थित बनाने के लिए शिक्षक–शिक्षा की आवश्यकता पड़ती है। शिक्षा व्यवस्था आज इस चुनौती को स्वीकार नहीं कर पा रही है। शिक्षा व्यवस्था के उस विकल्प को चुनना हमारी मजबूरी है, जो व्यक्ति के चिन्तन को समाजपरक बनाए। शिक्षक–शिक्षा को व्यक्ति का समाजपरक दृष्टिकोण विकसित करने के लिए विशिष्ट प्रबन्ध करने चाहिए।

9. शिक्षा से सम्बन्धित विभिन्न संसाधनों का शिक्षक–शिक्षा में उपयोग :

विभिन्न भाषाओं में उपलब्ध साहित्य, अनुवाद से प्राप्त साहित्य विभिन्न भाषाओं में उपलब्ध फिल्म व सीरियल, समाचार पत्रों व पत्रिकाओं में प्रकाशित लेख, शोध निष्कर्षों की समीक्षा, व्यवसायिक विशेषज्ञों के अनुभव, विभागीय जाँच रिपोर्ट, विभिन्न जनमत संग्रह, आँकड़ों का तुलनात्मक अध्ययन, विभिन्न विषयों से सम्बन्धित साहित्य, स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास, विभिन्न सभ्यताओं का इतिहास, विज्ञान के नवीनतम उपयोग से सम्बन्धित ज्ञान का निरन्तर मूल्याँकन शिक्षक–शिक्षा की दृष्टि से होता रहना चाहिए, जिससे शिक्षक–शिक्षा के लिए अपेक्षित संसाधनों की उपलब्धता बनी रहे।

10. मूल्यांकन के विकल्प व शिक्षक–शिक्षा :

मूल्याँकन के सन्दर्भ में शिक्षक–शिक्षा में विशिष्ट प्रक्रिया अपनाने की आवश्यकता है। वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में प्रयुक्त मूल्यांकन प्रक्रिया ही शिक्षक–शिक्षा में प्रयुक्त की जाती है। मूल्याँकन से सम्बन्धित दोष शिक्षक–शिक्षा में भी हैं।

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

वार्षिक मूल्याँकन के स्थान पर सतत् मूल्याँकन प्रक्रिया अपनाई जानी चाहिए। सतत् मूल्याँकन की सूचना गोपनीय न हों। छात्र को पुर्नमूल्याँकन हेतु अवसर सुलभ हों। मूल्याँकन हेतु अपनायी जाने वाली विधियों की जानकारी छात्रों को पूर्व में उपलब्ध करा दी जाये। आन्तरिक मूल्याँकन और बाह्य मूल्याँकन में विषमता पायी जाने पर निरपेक्ष मूल्याँकन हेतु उत्तर पुस्तिकाएँ प्रतिष्ठा प्राप्त संस्थानों को भेजी जानी चाहिए। शिक्षकों को मूल्याँकन हेतु किसी भी प्रकार का पारिश्रमिक न दिया जाय। मूल्याँकन कार्य शिक्षक के कर्तव्य के साथ जोड़ा जाना चाहिए। मूल्याँकन कार्य ऐच्छिक न हो। छात्राध्यापकों के साथ–साथ शिक्षक–शिक्षा संस्थाओं के मूल्याँकन की सतत् प्रक्रिया भी अपनायी जानी चाहिए। मूल्याँकन की नवीनतम विधियों की समीक्षा निरन्तर की जानी चाहिए जिससे उत्तम विधियों का प्रयोग किया जा सके।

11. शिक्षक–शिक्षा एवं शिक्षण कार्य :

आज सूचना तकनीक व संचार साधनों की भौतिक उपलब्धता हमें अवसर प्रदान कर रही है कि हम शिक्षण–अधिगम के क्षेत्र में उपलब्ध सीरियल, फिल्म, नाटक, कहानी, प्रतियोगिता कार्यक्रम, संवाद, चर्चा–परिचर्चा, बाल–सभा, खेलकूद इत्यादि का शैक्षिक उपयोग की दृष्टि से मूल्यांकन करें, साथ ही शिक्षक शिक्षा में ज्ञानात्मक, भावात्मक एवं भावात्मक उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु नवीन कार्यक्रमों का निर्माण भी किया जाना चाहिए। ऐसी स्थिति में आवश्यक हो जाता है कि शिक्षक–शिक्षा की शिक्षण विधियों ऐसी हों जो शिक्षकों को निम्न कार्यो को सम्पादित करने योग्य बना सकें।

A. अभिनय करना।

B. चित्रों एवं घटनाओं का संकलन।

C. प्रस्तावना व प्रस्तुतीकरण।

D. अनुच्छेद लेखन (कार्यक्रम आधारित)

E. संवाद लेखन व मौखिक अभिव्यक्ति।

F. आत्मसातीकरण योग्य चित्रांकन।

G. चर्चा– परिचर्चा (नियोजन, कार्यक्रम संयोजन, क्रियान्वयन, कार्यक्रम निर्माण व प्रदर्शन)।

H. पत्र लेखन, पत्र पठन, पत्रोत्तर प्रक्रिया।

I. सूचना का सम्प्रेषण, फोन वार्ता, समस्या का प्रस्तुतीकरण, समस्या समाधान सन्देश (निष्कर्ष)।

J. कौशल विकास व सहभागिता (कार्यक्रम निर्माण, प्रदर्शन, समीक्षा, कार्यक्रम का उपयोग/फोन वार्ता पत्र पठन एवं उत्तर)

K. शैक्षिक भ्रमण (ऐतिहासिक परिचय, कार्यक्रम निर्माण, विद्वान वार्ता, वृतान्त एवं प्रदर्शन) उदाहरण– दुलर्भ स्थान, दुर्लभ घटनाएँ, दुर्लभ क्रियाकलाप)

L. फोटो खींचना Videography

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

M. सम्पादन (कार्यक्रम सम्पादन)

N. विडियो कार्यक्रम हेतु लिखना (Writing for video)

O. वेश–भूषा (निर्धारण, परिवर्तन)

P. विभिन्न कृत्रिम परिस्थितियों का निर्माण जो स्वाभाविक महसूस हों।

Q. निर्देशन (कलाकार एवं सहयोगियों का पथ प्रदर्शन)

R. सम्प्रेषण– विभिन्न माध्यमों का प्रयोग व माध्यमों का उद्देश्य– पूर्ण संयोजन

S. **ज्ञान स्थानान्तरण के अद्भुत प्रयोग :–**

(i) विचार स्थानान्तरण (Programme Construction for idea Generate)

(ii) भाव स्थानान्तरण (Programme Construction for emotional development or Character Building)

(iii) शारीरिक नियंत्रण (Programme Construction for Skill Oriented work (Action with best performance) or Habit Building

T. **ज्ञान विज्ञान परिचय (Programme Oriented) :-**

(i) भ्रमण कार्य (अभयारण्य इत्यादि)

(ii) वार्ता नियोजन (उद्देश्यपूर्ण)

(iii) समीक्षा करना।

(iv) सूची बनाना।

(v) संकलन करना (सूचनाएँ, घटनाएँ)

(vi) मॉडल बनाना।

(vii) वैज्ञानिक प्रयोग का कार्यक्रम बनाना।

(viii) पत्तियाँ एकत्र करना।

(ix) नमूने एकत्र करना।

(x) वृतान्त (परिचय क्रमबद्धता के साथ)

U. **सामाजिकता का विकास :–**

(i) उत्सव मनाना।

(ii) पारस्परिक सम्प्रेषण।

(iii) समूह में एकत्र होना व पारस्परिक सहयोग।

(iv) समन्वय।

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

(v) स्वस्थ परम्परा।

(vi) स्वस्थ दृष्टिकोण की उत्पत्ति।

(vii) विचार अभिव्यक्ति।

(viii) सृजनशीलता का विकास (नयी परम्पराओं का प्रचलन)

(ix) स्वस्थ सामाजिक जीवन के नये उपयोगी कार्यक्रम (प्रायोगिक प्रकल्प)

(x) वार्ता नियोजन (उद्देश्यपूर्ण)

उदाहरण– Happy Home (A serial)

V. **पहचान और उपयोग :–**

(i) पशु पक्षियों की आवाजें
(ii) न्यायिक प्रक्रिया
(iii) विधायी प्रक्रिया
(iv) आपदा निवारण
(v) रोग एवं रोग से बचाव
(vi) प्रश्न मंच
(vii) स्वतंत्रता की कहानी

} कार्यक्रम निर्माण व प्रदर्शन

W. **प्रेरक दर्शन :–**

(i) सामाजिक कल्याण।
(ii) राष्ट्र कल्याण।
(iii) शारीरिक रूप से अक्षम व्यक्तियों के प्रति सहानुभूति।
(iv) आर्थिक रूप से कमजोरों के प्रति सहानुभूति
(v) आतंकवादियों से बचाव।
(vi) साम्प्रदायिक सद्भाव।
(vii) ऊर्जा का सदुपयोग।
(viii)
(ix) सामाजिक बुराइयों से बचाव।
(x) व्यक्तिगत बुराइयों से बचाव।

} कार्यक्रम निर्माण व प्रदर्शन

कूड़ा प्रबन्धन।

X. शिक्षण के उचित विकल्पों की निरन्तर खोज।

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

Y. शिक्षण के विभिन्न विकल्पों की निरन्तर तुलना।

Z. शिक्षण की समस्याओं का निरन्तर विश्लेषण।

निष्कर्ष :

शिक्षक–शिक्षा के सन्दर्भ में कुछ कहने से पूर्व शिक्षा व्यवस्था के चुने गए विकल्प के औचित्य पर प्रकाश डाला जाय। शिक्षक शिक्षा के सन्दर्भ में आदर्श शिक्षक महाविद्यालय, प्राथमिक, माध्यमिक, अकादमिक स्टाफ कालेज, प्रबन्धन, पाठ्यक्रम, शिक्षण अभ्यास, शुल्क संरचना, प्रवेश प्रक्रिया, मूल्याँकन प्रक्रिया, शिक्षक चयन इत्यादि निर्भर करेगा उस शिक्षा व्यवस्था पर जो पूर्व में चुनी गई है। उपर्युक्त सभी तत्व शिक्षा व्यवस्था से प्रभावित होंगे। सामान्य रूप से किसी भी तत्व की चर्चा करना निरर्थक होगी। इसी कारण शोधार्थी ने पृथक रूप से किसी की चर्चा न कर शिक्षक शिक्षा की चर्चा की है जो मिश्रित बहु माध्यम उपयोग की शिक्षा व्यवस्था पर आधारित है।

सन्दर्भ

मेहरोत्रा आर0एन0 : *'टीचर एजूकेशन इन माई ड्रीम्स' एम0ए0आई0 जर्नल आफ एजूकेशन, अक्टूबर 2006*

राजपूत जे0एस0 : *'उच्च शिक्षा की दुविधाएं' आगरा दैनिक जागरण 8 अप्रैल 2007*

कृष्ण कुमार : *'शिक्षा का उद्देश्य और आज की व्यवस्था', भारतीय आधुनिक शिक्षा, अप्रैल 2005*

कृष्ण कुमार : *'स्वतंत्र भारत में शिक्षा और समाज' परिप्रेक्ष्य, दिसम्बर 2000, पृष्ठ 1*

अरोरा रंजना : *'राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 और इसके विभिन्न क्षेत्रों में बदलाव के सुझाव' भारतीय आधुनिक शिक्षा, जुलाई 2005*

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies